इकाई-I

# 1. कबीर

रचनाकार

**कबीर** के जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत। कबीर ने विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि कबीर की रचनाएँ मुख्यतः **कबीर ग्रंथावली** में संग्रहित हैं किंतु कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह **बीजक** ही प्रामाणिक माना जाता है। कुछ रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहेब' में भी संकलित हैं।

कबीर अत्यंत उदार, निर्भीक तथा सद्गृहस्थ संत थे। राम और रहीम की एकता में विश्वास रखने वाले कबीर ने ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया। उन्होंने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की। ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग और साधु-महिमा के साथ आत्मबोध और जगतबोध की अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। कबीर की भाषा की सहजता ही उनकी काव्यात्मकता की शक्ति है। जनभाषा के निकट होने के कारण उनकी काव्यभाषा में दार्शनिक चिंतन को सरल ढंग से व्यक्त करने की शक्ति है।

## प्रस्तावना प्रसंग

नर नारायण स्वरूप है, सारी दुनिया में परमेश्वर भरा है। इस परमेश्वर की सेवा हमारे हाथों होनी चाहिए। परमेश्वर की पूजा यानी दीन-दुखी जनों की सेवा।

**-आचार्य विनोबा भावे**

## प्रश्न

1. विनोबा जी परमेश्वर की सेवा किसे मानते हैं?
2. आप किस प्रकार की सेवा करना चाहेंगे?
3. समाज सुधारक कबीर के बारे में आप क्या जानते हैं?

## भूमिका

यहाँ संकलित साखियों में प्रेम का महत्व, संत के लक्षण, ज्ञान की महिमा, बाह्याडंबरों का विरोध आदि भावों का उल्लेख हुआ है। पहले सबद (पद) में बाह्याडंबरों का विरोध एवं अपने भीतर ही ईश्वर की व्याप्ति का संकेत है तो दूसरे सबद में 'ज्ञान की आँधी' के रूपक के सहारे ज्ञान के महत्व का वर्णन है। कबीर कहते हैं कि ज्ञान की सहायता से मनुष्य अपनी दुर्बलताओं से मुक्त होता है।

SCERT TELANGANA

# साखियाँ

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।। ।1।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।। ।2।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।। ।3।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।। ।4।

हिंदु मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।। ।5।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।। ।6।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।। ।7।

SCERT TELANGANA

# सबद (पद)

1. मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

2. संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी।।

हिति चित्त की दूवै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।

जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।

कहै कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम खीनाँ।।

SCERT TELANGANA

# प्रश्न–अभ्यास

## अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

### ❖ विचार–विमर्श

1. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? इस बारे में अपने विचार दीजिए।
2. हमें बड़ों की बातों का अनुसरण क्यों करना चाहिए? चर्चा कीजिए।

### ❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

**क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।**

1. यह किस दोहे का संदेश है?

   क. जो ईश्वर–भक्ति में लीन हो जाता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं भटकता।

   ख. हमें परमात्मा के रहस्य को समझे बिना धार्मिक आडंबरों के बंधन में नहीं फँसना चाहिए।
2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बतायी है?
3. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

**ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।**

1. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है?
2. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?
3. कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस क्यों कहा है?

**ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार**

नीचे दिए गए कबीर के दोहे पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

*काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।*
*पल में परलै होयगो, बहुरि करैगो कब।।1।।*
*धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।*
*माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।2।।*

1. पहले दोहे का भाव क्या है?
2. दूसरे दोहे का भाव बताइए।
3. दोनों दोहे कबीर ने ही लिखे हैं। उन्होंने परस्पर विरोधी बातें क्यों कही होंगी?

SCERT TELANGANA

## अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

### ❖ स्वाभिव्यक्ति

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?
2. ज्ञान का हमारे जीवन में क्या महत्व है?
3. कबीर ने धार्मिक आडंबरों का खंडन किया है लेकिन साथ-ही साथ वे ईश्वरीय सत्ता को भी स्वीकार करते हैं। आप किस प्रकार की भक्ति में विश्वास रखते हैं? अपने विचार लिखिए।
4. आज भी समाज में अनेक अंधविश्वास हैं। उन्हें दूर करने लिए आप क्या करना चाहेंगे?
5. धार्मिक सद्भावना सामाजिक एकता की कड़ी है। स्पष्ट कीजिए।

II. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।
2. प्रेम और ज्ञान के बारे में कबीर के विचारों पर प्रकाश डालिए।
3. कबीर के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

### ❖ सृजनात्मक कार्य

इस पाठ से कुछ सूक्ति वाक्यों का निर्माण कीजिए। उसे चार्ट पर लिखकर दीवार पत्रिका पर लगाइए।

उदाहरण : महानता श्रेष्ठ कुल से नहीं, श्रेष्ठ कर्मों से प्राप्त होती है।

### ❖ प्रशंसा

वर्तमान समाज में जहाँ तीव्र गति से मूल्यों का निरंतर ह्रास हो रहा है, वहाँ कबीर जैसे संतों के उपदेशों का क्या महत्व है?

## भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख

## परियोजना कार्य

कबीरदास एक समाज सुधारक कवि के रूप में विख्यात हैं। उनकी तरह के किसी एक अन्य कवि की कोई एक रचना खोज कर लिखिए।

SCERT TELANGANA